सिन्धु घाटी सभ्यता का वर्तमान में सांस्कृतिक एवं आर्थिक प्रभाव

Cultural and economic impact of sindhu civilization at present reference

Research Scholar Name : BHUMIKA GOVINDANI NEE RAJKUMARI,
Research Guide Name : DR. AJAY KUMAR SHARMA,
S.P.C. GOVT. COLLEGE, AJMER.

ष्षोध पत्र के उद्देष्य

- सिन्धु घाटी सभ्यता तथा उसका समाज पर पड़ने वाले प्रभाव का विष्लेषण करना।
- सिन्धु सभ्यता के सांस्कृतिक व आर्थिक प्रभाव का वर्तमान में तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन तकनीक

- प्रस्तावित षोधकार्य में षोधकर्ता द्वारा विषय से सम्बन्धित अब तक प्रकाषित व अप्रकाषित साहित्य सामग्री का अध्ययन तथा अध्ययन के निर्धारित उद्देष्यों के अनुसार प्राथमिक व द्वितीय आंकड़ों को विभिन्न स्त्रोतों से एकत्रित कर उनका अध्ययन, संकलन, संपादन, समवर्धन, मानचित्रण, सारणीकरण एवं संष्लेषण किया जायेगा। आंकड़ों के विष्लेषण के लिए कम्प्यूटर तकनीक का उपयोग करना होगा।
- सूचनाएँ एकत्रित करने हेतु षोध, लेख, जर्नल, प्रोजेक्ट रिपोर्ट, समाचार पत्र, वेब साईट तथा साक्षात्कार विधि तथा फोटोग्राफी को भी उचित स्थान देने का प्रयास होगा।
- आज सरस्वती सिन्धु सभ्यता विष्व की प्राचीन सभ्यता स्वीकृत हो चुकी है, किन्तु लुप्त वैदिक नदी सरस्वती की खोज से पूर्व यह केवल सिन्धु सभ्यता के नाम से जानी जाती थी। यह सिन्धु सभ्यता मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में विषाल पुरावषेष प्राप्त होने के साथ ही विष्व पटल पर छा गई। इसके दोनों प्रमुख नगर मोहनजोदड़ो और हड़प्पा तो जन–जन की जुबान पर आ गए, किन्तु इन नगरों की जननी सिन्ध प्रदेष को इतिहास में अपेक्षित नगरों स्थान प्राप्त नहीं हुआ। सिन्ध भारत के उत्तर पष्चिम में स्थित है। यह सिन्धियों की ऐतिहासिक भूमि है, जिसे स्थानीय भाषा में 'मेहरान' कहा जाता है। जिसका अर्थ है Rain of kindne भारत विभाजन के बाद यह सिन्ध प्रदेष राजनीतिक रूप से पाकिस्तान का भाग बन गया। सिन्ध क्षेत्रफल के आधार पर पाकिस्तान का तीसरा बड़ा प्रान्त है। प्रथम स्थान पर बलूचिस्तान और द्वितीय पर पंजाब है। इसका क्षेत्रफल 140,914 वर्ग किमी है।

मोहनजोदड़ो और हड़प्पा का मानचित्र द्वारा प्रदर्षन

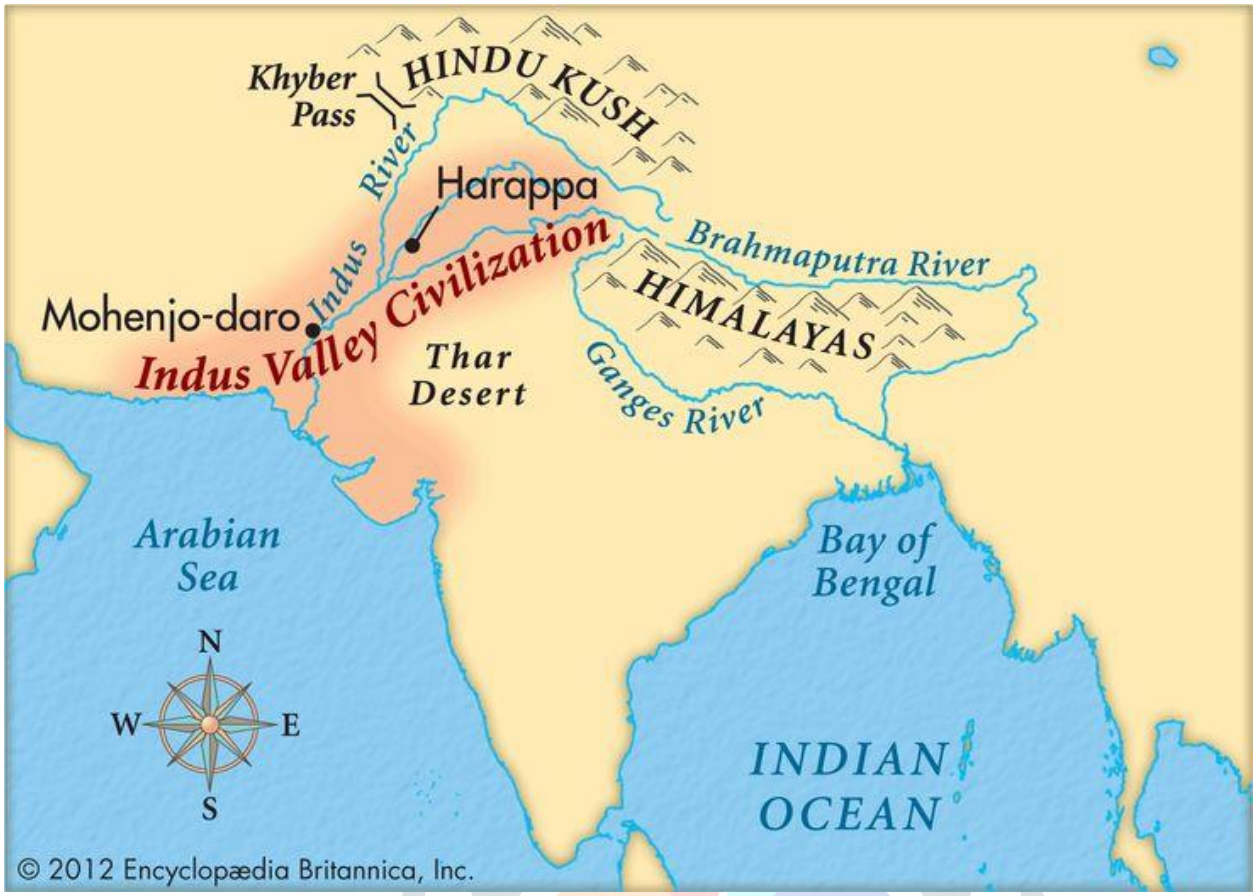

सिन्धु सभ्यता का परिचय

- मोहनजोदड़ो सिन्धु नदी के पष्चिम में सिन्ध (पाकिस्तान) के लरकाना जिले में स्थित है।
- 1921 में दयाराम साहनी तथा 1922 में राखलदास बनर्जी द्वारा हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के लिए किये उत्खननों से सिन्धु सरस्वती सभ्यता का अनावरण हुआ।
- सिन्धु सभ्यता सिन्धु नदी की घाटी में फैली हुई थी इसलिए इसका नाम सिन्धु घाटी सभ्यता रखा गया।
- दिसम्बर 2014 में 'भिरड़ाणा' को सिन्धु घाटी सभ्यता का अब तक का सबसे प्राचीन नगर माना गया है।

नगर नियोजन

- सिन्धु सभ्यता के नगर नियोजक वास्तुकला क्षेत्र के कुषल अभियन्ता थे। हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो उच्च कोटि के नगर निवेष (Town Planning) का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इन नगरों की खुदाई में दो टीले प्राप्त होते हैं। पूर्वी टीले पर आवास तथा पष्चिमी टीले पर दुर्ग स्थित था।
- कालीबंगा के दुर्ग तथा नगर दोनों में सुरक्षा प्राचीर पाई गई है। प्राचीर के निर्माण में ईंटों का प्रयोग होता था।
- ऊँचे स्थानों पर दुर्ग निर्माण अपने नगरों को बाढ़ से बचाने हेतु किए गए थे।

- अतः सिन्धु घाटी सभ्यता में नगर वर्तमान नगरों तथा गाँवों से ज्यादा नियोजित दिखाई देते हैं। यह विष्व की प्रथम सभ्यता थी जहाँ नगर नियोजन देखा गया और वह भी बहुत उच्च कोटि का था। आज के समय में अभी भी नगरों व गाँवों में ऐसा नियोजन नहीं देखा जाता। प्राकृतिक आपदाओं से बचाव हेतु कोई उचित उपाय नहीं किया जाता। बाढ़ में कई गाँवों के गाँव डूब जाते हैं तथा पूरा गाँव ही नष्ट हो जाता है जबकि सिन्धु सभ्यता के लोग इन सब आपदाओं के लिए पहले से ही सजग थे ताकि कोई जन–धन की हानि ना हो।

सड़कें

- मोहन जोदड़ो की मुख्य सड़क 9.15 मीटर चौड़ी थी, जिसे पुराविदों (Highway) कहा है।
- मुख्य सड़क दूसरी सड़कों को समकोण पर काटती थी। अन्य सड़कों की चौड़ाई 2.75 मीटर से लेकर 3.66 मीटर तक होती थी।
- ये सड़कें नगर को अनेक वर्गाकार अथवा चतुर्भुजाकार खण्डों में विभाजित करती थी।
- सड़कें कच्ची होती थी, किन्तु उनमें सफाई का पूर्ण ध्यान रखा जाता था।
- इस पर कूड़ा–करकट एकत्र करने के लिए स्थान स्थान पर गड्ढे खोदे जाते थे अथवा कूड़ा पात्र रखे जाते थे।
- वर्तमान में नगरों व गाँवों में सड़कों की चौड़ाई अभी भी 30–50 फीट तथा कई जगह आन्तरिक मार्ग तो 3 मीटर लगभग 9 फीट ही चौड़े हैं। सड़कें कहीं पर कच्ची तो कहीं पक्की है सफाई का कोई ध्यान नहीं दिया जाता है। कचरा गन्दगी कूड़ा ऐसे ही कहीं भी फेंक दिया जाता है। अतः नगरों में कई प्रकार की बीमारियाँ फैल जाती है। कई जगह कूड़ा–पात्रों का अभाव होता है लोगों को गन्दगी में ही रहना पड़ता है। इसके अलावा लोग सार्वजनिक मार्गों पर भी अतिक्रमण कर लेते हैं।

जल निकासी एवं सफाई व्यवस्था

- नगर में नालियों की सुन्दर व्यवस्था थी। प्रायः प्रत्येक सड़क के दोनों ओर पक्की नालियों को पत्थर की पट्टिकाओं में ढक दिया जाता था।
- मकान, रसोई, स्नान गृह, शौचालय आदि सभी से निकलकर नालियों को एक बड़ी नाली से जोड़ दिया जाता था। स्थान स्थान पर मेन होल बने होते थे।
- इन्हें बड़ी–बड़ी ईंटों से ढका जाता था जिन्हें हटाकर नालियों को साफ करते थे।
- नालियां सामान्यतः 18 इंच तक गहरी होती थी।
- जल निकास प्रणालियां केवल बड़े शहरों तक सीमित नहीं थी बल्कि ये कई छोटी बस्तियों में भी मिली थी।
- जबकि नगरों व गाँवों में जल निकासी और सफाई का हाल तो और भी भयावह है। आज भी पक्की नालियों के अभाव के कारण पानी फैल जाता है। इसके अलावा गाँवों में स्नान गृह और शौचालय भी नहीं मिलते हैं। अतः लोगों को खुले में ही शौच जाना पड़ता है। इस दिषा में सरकार द्वारा कदम उठाये गये हैं परन्तु फिर भी पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हो पाई है। सिन्धु सभ्यता से प्राप्त प्रमाणों के अनुसार वहाँ घरों से निकलने वाली नालियां बड़ी–बड़ी ईंटों से ढकी होती थी उन्हें हटाकर नालियों को साफ किया जाता था। वर्तमान में गाँवों में तो नालियों

के सफाई की कोई व्यवस्था नहीं है जिससे ठोस अवषिष्ट उसमें जमा ही होता रहता है और जल निकासी की समस्या सदैव बनी रहती है।

भवन निर्माण

- भवन निर्माण ईंटों से होता था। वे पहले कच्ची होती थी, बाद में भट्टों पर पकाई जाने लगी। कालीबंगा में 40 से. मी. लम्बी 20 से.मी. चौड़ी और 7.6 से.मी. ईंटें पाई गई है, जो 4:2:1 या 3:2:1 की होती थी। कालीबंगा में भवनों के फर्ष, खड़ी ईंटों से बने हैं। कुछ घरों में फर्ष पक्की टाइलों से वृत्ताकार आकर्षक आकृतियों वाले हैं। फर्ष के तल में टेराकोटा के नोड्यूल और लकड़ी के कोयले के मिश्रण के पर्त पाई गई है। ऐसे फर्ष नमी, क्षार (खारापन) और दीमक के प्रभाव से मुक्त होते हैं। कालीबंगा से 20 किलोमीटर दूर हनुमानगढ़ में आज भी ऐसे घर और फर्ष पाए जाते हैं।

- आज भी कुछ नगरों व गाँवों में भवनों का निर्माण मिट्टी से होता है तथा फर्ष भी कच्चे पाये जाते हैं जिससे मकान के टूटने का भय रहता है। मकानों में हवा तथा प्रकाष की भी कोई व्यवस्था नहीं होती है। पीने के पानी के लिए लोगों को दूर–दूर भटक कर कतारों में लगना पड़ता है।

बृहत्स्नानागार

- यह मोहनजोदड़ो का सर्वाधिक उल्लेखनीय स्मारक है जो उत्तर से दक्षिण तक 180′ (54.86 मीटर) तथा पूर्व से पष्चिम तक की 108′ (लगभग 33 मीटर) है। इसके केन्द्रीय खुले प्रांगण के बीच जलकुण्ड या जलाषय बना है। यह 39 फुट (11.89 मीटर) लम्बा, 23 फुट (7.01 मीटर) चौड़ा तथा 8 फुट (2.44 मीटर) गहरा है। इसमें उतरने के लिये उत्तर तथा दक्षिण की ओर सीढ़ियां बनी हैं जलाषय की फर्ष पक्की ईंटों की बनी है। फर्ष तथा दीवार की जुड़ाई जिप्सम से की गयी है। बाहरी दीवार पर बिटूमेन का एक इंच मोटा (2.54 से.मी) प्लस्तर लगाया गया है। जिप्सम तथा बिटूमेन जलाषय को सुदृढ़ बनाते हैं। विषाल स्नानागार भवन के दक्षिणी–पष्चिमी छोर पर एक नाली थी जिसके द्वारा पानी निकलता था। इसका उपयोग धार्मिक समारोहों के अवसर पर किया जाता था।

सभा भवन

- दुर्ग के दक्षिण की ओर 27×27 मीटर के आकार का एक वर्गाकार भवन मिलता है। जिसे 'सभा भवन' कहा गया है। इसमें ईंटों के 20 चौकोर स्तम्भों के अवषेष मिले हैं। इनकी चार कतारें हैं, प्रत्येक में पाँच–पाँच स्तम्भ हैं। मुख्य प्रवेष द्वार उत्तर की ओर था। संभवतः इन स्तम्भों पर भवन की छत टिकी हुई थी। इस प्रकार यह स्तम्भों वाला भवन था। मैके के विचार में यहाँ कोई बाजार लगती होगी। लगता है कि इस भवन का उपयोग सार्वजनिक सभाओं के लिये किया जाता था। जबकि आज भी सार्वजनिक सभाएं सड़क पर या खुले मैदान में ही होती है इसके लिए कोई सार्वजनिक भवन नहीं है।

सिन्धु घाटी सभ्यता का सांस्कृतिक प्रभाव

- सिन्धु सभ्यता के लोग मुख्यतया देवी देवताओं के रूप में मातृदेवी की उपासना करते थे।

- वे योग व ध्यान के ज्ञाता थे।

- वे उपजाऊ चिन्ह के रूप में गोल पत्थर और छिदे हुए पत्थर की भी षिव और पार्वती के रूप में षिवलिंग को पूजा करते थे।

- सिन्धु वासियों को जादू टोने, मन्त्रों तथा ताबीजों में भी विष्वास था।
- वे मृत्यु के बाद दूसरे जन्म में भी विष्वास करते थे, अर्थात् वे पुर्नजन्म में भी विष्वास करते थे।
- थौलावीरा कच्छ में मोहनजोदरों का जो विषाल स्नानागार मिला है, वहां सम्भवतयां लोग शुद्धि के लिए या विषेष अवसरों पर धार्मिक स्नान करने के लिए उपयोग करते होगे।

सिन्धु घाटी सभ्यता पर सिन्धी समाज और अन्य लोगो की राय

Age Group :60-80 Random Sample : 20 Persons

क्रम	विवरण	हाँ	नहीं	प्रतिषत हाँ	प्रतिषत नहीं
01	क्या आप सिन्धु घाटी सभ्यता से परिचित है?	16	4	80	20
02	क्या आप जल की पूजा करते है?	19	1	95	5
03	क्या आप योग व ध्यान में विष्वास करते है?	12	8	60	40
04	क्या आप कार्तिक माह में धार्मिक स्नान करने पुश्कर जाते है?	15	5	75	25
05	क्या आप पुर्नजन्म में विष्वास करते हैं?	11	9	55	45
06	क्या आप देवी–देवताओं की पूजा करते हैं?	20	0	100	0

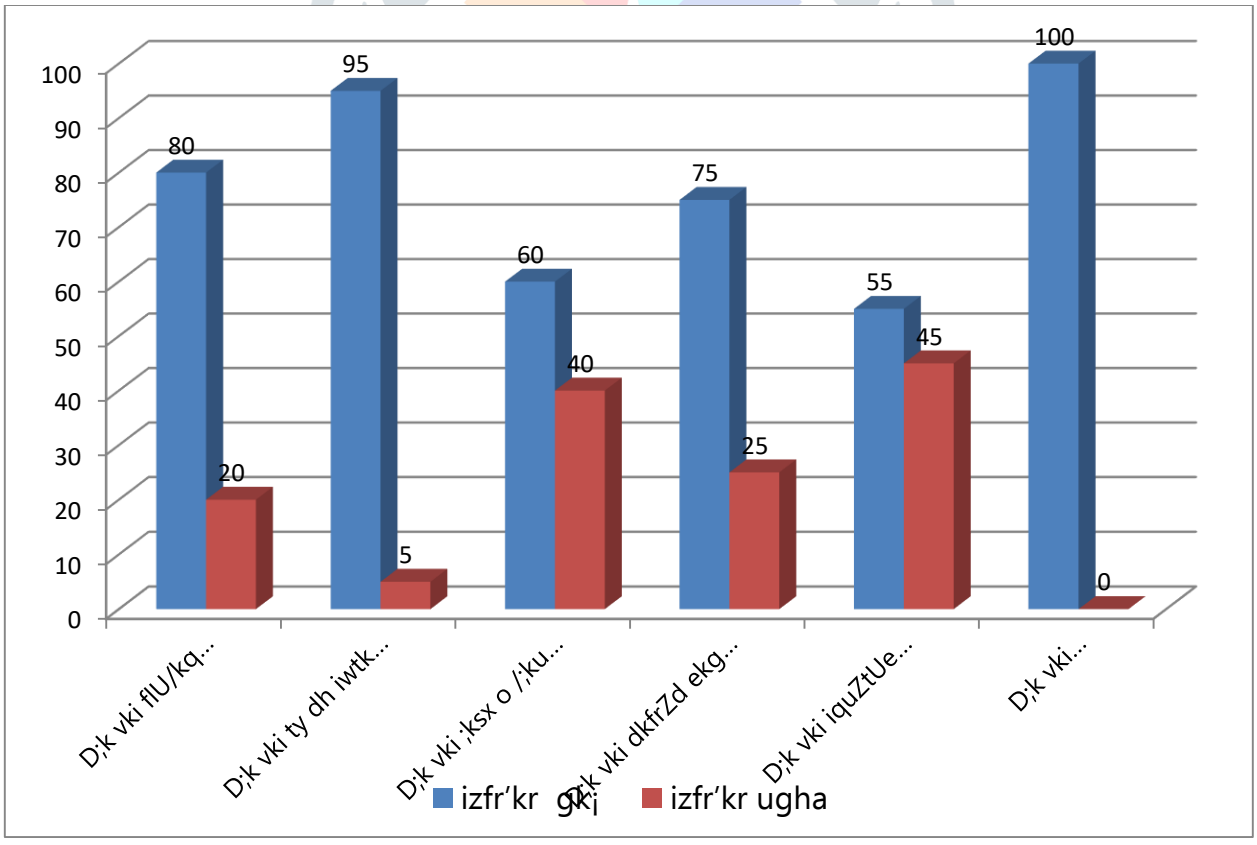

सिन्धु घाटी सभ्यता का आर्थिक प्रभाव

- सिन्धु सभ्यता के अधिकांष नगर सुनिष्चित सिंचाई की सुविधा से युक्त उपजाऊ नदी के तटों पर स्थित थे। जलवायु की अनुकूलता, भूमि की उर्वरकता एवं सिचांई की सुविधाओं के अनुरूप विभिन्न स्थलों पर फसलें उगाई जाती थी।

- सिन्धु सभ्यता से ही कपास की खेती का विष्व को पहला उदाहरण मिला है।

- निष्चित रूप से इसी परम्परा का अनुकरण आज भी किया जाता है, भले ही तकनीकी ज्ञान का काफी सीमा तक विकास हो गया है, परन्तु आज भी जलवायु की अनुकूलता, भूमि तथा सिंचाई सुविधा के अनुरूप ही फसले बोई व काटी जाती है। कपास उत्पादन में भारत का विष्व में दूसरा स्थान है। यहां 6,423 हजार मिट्रिक टन कपास का उत्पादन होता है। वर्तमान में भी सिन्धु सभ्यता की तरह जुते हुए खेतों में कृषि की जाती हैं।

- इसी प्रकार पषुपालन का ज्ञान भी हमें सिन्धु सभ्यता से प्राप्त हुआ। पषुओं को पालना और उनसे निर्मित वस्तुओं का व्यापार करना। इसी प्रकार इस कास्य युगीन सभ्यता ने ताँबा व टिन को मिलकार कांसे के सुन्दर बर्तन बनाना सिखाया जो कि धातु कला के श्रेष्ठ उदाहरण है। इस सभ्यता में कांसे की वस्तुओं में नर्तकी की मूर्ति मुख्य है।

- सिन्धु सभ्यता में व्यापार के लिए वस्तु विनिमय प्रणाली का प्रयोग किया जाता था। यहां से भारी संख्या में मुहरे मिली है, उनका उपयोग पत्र या पार्सल पर छाप लगाने के लिए किया जाता था। तोल की इकाई 16 के अनुपात में थी, जैसे 1, 2, 4, 8, 16, 32, 64 ..... सोलह के अनुपात में तौल मापने की परम्परा हमारे यहां आधुनिक काल तक चली आ रही है।

- इस प्रकार मुद्रा के सिक्कों का चलन भी सिन्धु सभ्यता से चला आ रहा है। कही न कही सिन्धु सभ्यता के वंषजों ने सिन्धु सभ्यता को भारतीय सभ्यता से मिश्रित कर अग्रणी स्थान दिलाया है। इस प्रकार कृषि तथा पषुपालन में भी सिन्धुवासियों ने अपने नवीन प्रयोग किये, जो बाद में भारतीय अर्थव्यवस्था के अंग बन गये।

- यह सभ्यता अपने समय की समृद्ध तथा अनूठी सभ्यता थी। यह सभ्यता आज भले ही नष्ट हो गई हो लेकिन उसकी संस्कृति के अनेक तत्वों का अविरल तरंग प्रवाह हमारी संस्कृति में आज भी विद्यमान है। इस सभ्यता की स्थापत्य कला आज आधुनिक भारत के कई भवनों में दिखाई देती है। वहाँ के नगर–नियोजन से प्रेरित कई नगर भारत में विद्यमान है। सिन्धु सभ्यता के निवासियों की आभूषण प्रियता और श्रृंगार के प्रति जागरूकता हमारे सामाजिक जीवन में आज भी देखी जाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास – डॉ. विमलचन्द्र पाण्डेय
- प्राचीन भारत – डॉ. राजबली पाण्डेय
- Mohanjodaro and Indus Civilization – Sir John Marshall
- सरस्वती की कहानी – श्रीमाली एवं श्रीमाली
- प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति – के.सी. श्रीवास्तव
- भारत का सांस्कृतिक साम्राज्य – डॉ. षिवकुमार अस्थाना